आज से हो जायें सेक्योर...

कई बार हम जीवन में दूसरों द्वारा की जाने वाली ईर्ष्या व नकारात्मकता के शिकार हो जाते हैं। कोई न कोई किसी न किसी रूप में किसी के पीछे ईर्ष्या की वर्षा करता रहता है। न जाने उसमें उनको कितना मज़ा आता है! पर जिससे वो ईर्ष्या करता है, यदि वो उसी नकारात्मकता के प्रभाव में आ जाता है तो उनका जीवन ही रसातल में चला जाता है। ऐसे आज अगर हम नकारात्मक बुराइयों के शिकार हुए लोगों की लिस्ट देखें तो इस दुनिया में ऐसे लोगों की कमी नहीं है। क्या वाकई कोई किसी के बारे में कोई बुराई करता है तो उनका जीवन प्रभावित होता है? ज़रा जानें हम इसकी सच्चाई को...

- ब्र.कु. गंगाधर

मान लीजिए कोई व्यक्ति किसी के व्यापार धंधे को चौपट करने के लिए ईर्ष्या करता है, तो क्या जिससे ईर्ष्या करता है उसका धंधा चौपट हो जायेगा? कतई नहीं। लेकिन समझने जैसी बात यह है कि यदि उसके नकारात्मक प्रभाव को हमने उसी स्वरूप में स्वीकार किया हो, तब धंधा चौपट होने की संभावना बढ़ जाती है। वो कोई हमारे भाग्य के कर्ता-धर्ता नहीं हैं। भाग्य तो हम अपने कर्मों से लिखते हैं। लेकिन फिर भी ऐसी चीज़ों पर विश्वास कर हम असुरक्षित(अनसेक्योर्ड) महसूस करने लग जाते हैं। वास्तव में किसी के द्वारा की गई ईर्ष्या या नकारात्मकता को हमने अपने मन में स्थान नहीं दिया तो उससे हम अप्रभावित ही रहेंगे। लेकिन अगर उसके प्रभाव में आकर हमारी सोचने की प्रक्रिया को हम उसी अनुसार बनायेंगे तो अवश्य ही हम उसके शिकार हो जायेंगे।

कई बार जीवन में हम कुछ मन में बनाये मान्यताओं के आधार पर ही अपने को अनसेक्योर्ड फील करते हैं, जैसे हम कोई शुभ कार्य करने जाते हैं, और बिल्ली ने रास्ता काट दिया या किसी दुष्ट व्यक्ति का मुखड़ा देख लिया तो मन में संदेह उत्पन्न हो जाता कि अब वो मेरा कार्य तो बिगड़ना ही है, क्योंकि मैंने इसका मुखड़ा देख लिया, या इस बिल्ली ने मेरा रास्ता काटा। मन में ऐसा विचार आता है ना? अगर हाँ, तो फिर वो हमारे परिणाम को प्रभावित करेगा ही। परंतु समझने की बात है कि ना तो बिल्ली को पता होता है कि आप किसी शुभ कार्य के लिए जा रहे हो, और ना ही दुष्ट व्यक्ति के सामने आने का कोई कार्यक्रम तय होता है कि आपके कार्य को बिगाड़ दें। लेकिन ऐसी मनघड़ंत मान्यताओं के कारण हम ऐसा सोच लेते हैं और उसका प्रभाव हमारे मन में संदेह पैदा करता है और हम स्वयं को अनसेक्योर्ड फील करते हैं। वास्तव में ऐसा होता तो आज घर में बिल्ली पालते ही क्यों? सच तो यही है, हम जबतक उन विचारों को उसी रूप से स्थान नहीं देते, तब तक उनके बुरे प्रभाव से हमारे जीवन में कुछ भी प्रभावित नहीं हो सकता।

आजकल कई बार संगठन में कार्य करते हुए, या दफ्तरों में या कम्पनीज़ में कार्य करते हैं तो कई बार किसी के बारे में ईर्ष्या के शिकार हो जाते हैं। ईर्ष्या करने वाला ईर्ष्या क्यों करता है, क्योंकि वो समझता है कि मेरे से ये आगे ना बढ़ जाये, या मेरा कम्फर्ट ज़ोन जो मैंने बनाया हुआ है, उसमें कहीं मुश्किल ना पैदा हो जाये। वास्तव में, कोई किसी को अपनी स्किल, जितना जिसको जो आता है, उसको दूसरों को सिखाने से ही उसकी सेक्योरिटी बढ़ती है, ना कि घटती है। जैसे कि कोई चाहता है कि मेरी स्किल मैं उसको ना सिखाऊँ, तो मान लो उनकी स्किल पचास प्रतिशत है तो वो उतनी ही रहेगी, उससे आगे नहीं बढ़ेगी। लेकिन जब दूसरों को सिखायेंगे तो उसकी कुशलता में निखार आता जायेगा, कुशलता बढ़ती जायेगी और जिसको सिखायेगा उसकी दुआयें भी मिलेंगी। जिससे उसके मन में शांति और खुशी का ग्राफ ऊपर बढ़ता जायेगा। तो आज कॉम्पिटीशन के ज़माने में हम अपने जीवन में क्या ग्रहण करते हैं, उससे ही हमारे भाग्य का निर्माण होता है, ना कि दूसरे हमें गिराने की बात करके हमारा भाग्य बिगाड़ सकते हैं। तो आज से हमें श्रेष्ठ विचारों का निर्माण करने की कला सीख लेनी चाहिए, क्योंकि हमें अपने भाग्य का निर्माता स्वयं बनना है। हाँ, उसका तौर-तरीका है कि हम उन सभी नकारात्मक व मन को दूषित करने वाली मान्यताओं से अपने मन को हटा लें। अर्थात् श्रेष्ठ संकल्पों की नींव द्वारा वर्तमान को सुंदर और खुशनुमा बना लें। अपना मनोबल बढ़ाने का सबसे सरल तरीका है सुबह सुबह अच्छे विचारों से अपने मन को पुष्ट व सबल बनायें। साथ साथ सोने से पहले दिन भर के हुए बोझिल व व्यर्थ बातों को मन से मुक्त करें तथा श्रेष्ठ व कल्याणकारी विचारों से मन का श्रृंगार कर परमात्मा की याद में सो जायें। तब ही हम अपने आप को सेक्योर्ड महसूस करेंगे और सुकून भरी ज़िन्दगी जी पायेंगे।

भगवान का बच्चा माना बिल्कुल सच्चा

हम शब्दों में कैसे आयें, वाह बाबा वाह कहने से क्या क्यों से बच गये। जो हो रहा है, अच्छा हो रहा है। अमृतवेले के महत्व को जान जो बाबा के पास हाज़िर होते हैं उन्हें सुख मिलता इलाही है। अमृतवेले का सुख, फिर मुरली का वन्डरफुल महत्व है। यह जो बाबा के बोल हैं बच्चे यह ज्ञान गुह्य है, गोपनीय है, रहस्ययुक्त है। अमृत पी रहे हैं, पिला रहे हैं और कोई काम नहीं है।

मैंने देखा है पाँच विकार काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार तो चले गये पर उनके बाल बच्चों में ईर्ष्या बहुत-बहुत अंदर में परेशान करती है। दूसरों को आगे बढ़ता हुआ देख सहन नहीं होता। उनका ज्ञान योग सब छूट जाता है। बाबा कहते बच्चे मायाजीत बनना हो तो विकर्माजीत बनो। जो बाबा ने कहा सतयुग में कर्म अकर्म हैं, कलियुग में कर्म विकर्म हैं और अभी श्रेष्ठ कर्म करने का समय है।

आत्मा के ज्ञान की गहराई में जाओ तब ही आत्म-अभिमानी बन सकेंगे। मैं आत्मा हूँ, ऐसे सिर्फ नहीं, मन बुद्धि संस्कार हैं, यह शरीर की कर्मेन्द्रियां हैं। मैं आत्मा शरीर में हूँ, पर मुझ आत्मा को इस शरीर की विकारी कर्मेन्द्रियों के वश नहीं रहना है। मन, बुद्धि, संस्कार और पाँच विकारों को जान परमात्म शक्ति ले पाँच विकारों पर जीत पानी है। दिन रात यही धुन लगी हुई है मुझे मायाजीत बनना है, यह कर्मेन्द्रियां शान्त और श्रेष्ठ कर्म करने के लिए हैं, इसके लिए मन शान्त, बुद्धि शुद्ध हो। कर्मेन्द्रियों के कारण मन चंचल है। बुद्धि में ज्ञान को धारण करो, परमात्मा से योग लगाओ। तो आत्मा में शक्ति आती है। फिर सेवा की बात आती है, दिनरात यही भावना है, यही स्वप्न है कि सबकी अन्त मते सो गते अच्छी हो। सबकी सद्गति हो, वह कैसे होगी? मन्सा शुभ भावना से। नि:स्वार्थ भाव है, निष्काम सेवा है। बाबा के अंतिम महावाक्य हैं बच्चे निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी हो रहना। सेवा करते भी ऐसी स्थिति हो। ऐसे नहीं कि सेवा में ऐसा बिज़ी हो जायें जो यह स्थिति बनाने का समय ही न मिले। अभी आप सभी के चिंतन में एक बाबा ही हो और कोई चिंतन नहीं। मैं राइट हूँ, यह सिद्ध करना ज़रूरी नहीं है। सच, सच है। सच इतना सच है जो झूठ को खत्म करने वाला है। इतना सच्चा बाबा ने बनाया है जो मुझे पता ही नहीं है कि झूठ क्या होता है। जिनका सच्चा बनने का पुरुषार्थ कम है, उन पर बहुत तरस पड़ता है।

इस बारी बाबा ने चार-पाँच बारी कहा कि अचानक कुछ भी हो जाये, उसके पहले ऐसी सेवा कर लो। जो सेवा बाबा को करानी है, वो मुझे करनी है। मन्सा सेवा का अभ्यास बढ़ाना है। वाचा से ज्ञान थोड़ा दो, कर्मणा से, सम्बन्ध से गुणदान दो। सम्बन्धों में गुणों का पता चलता है। हम राजयोगी, राजऋषि हैं, कर्मयोगी हैं, सतयुग की स्थापना करने के निमित्त हैं।

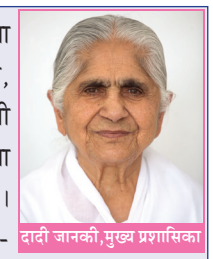
दादी जानकी,मुख्य प्रशासिका

भक्त लोग लक्ष्मी-नारायण के मंदिर में जायेंगे, हम भी जाते थे, दर्शन करते थे, पर यह कभी सोचा थोड़ेही था कि इन्होंने यह पद कैसे पाया? बाबा ने यह बताया, नर ऐसी करनी करे जो नर नारायण बन जाये, नारी लक्षण ऐसे धारण करे जो श्री लक्ष्मी बन जाये। तो हर एक को लक्ष्मी-नारायण बनना है। लक्षण को कर्म में देखना है, कर्म में श्रेष्ठ कर्म की करनी दिखानी है। तो विकर्माजीत बनने के लिए अटेन्शन बहुत चाहिए। खुद के लिए शुभ चिंतन में रहना, औरों के लिए शुभ चिंतक बनना। यह क्यों बोलते हैं, क्या बोलते हैं... क्यों क्या से बाबा ने छुड़ा दिया है। सिद्ध करने की ज़रूरत नहीं है। सच्चाई में बल है। भगवान का बच्चा बनना माना खुद सच्चा बनना, तो ताकत आती है।

यह गीत बहुत प्यारा लगता है - बचपन के दिन भुला न देना... याद हमारी रुला न देना, लम्बे हैं जीवन के रस्ते आओ चलें हम गाते हँसते... कितना अच्छा है। देखो सारा लाइफ क्या किया? बचपन के दिन याद करो, बहुत अच्छी कहानियाँ हैं।

महारथी वो, जो परिस्थितियों का सामना करने में महान हो

दादी हृदयमोहिनी, अति. मुख्य प्रशासिका

अभी पुरुषार्थ की रेस चल रही है, कोई भी सम्पन्न सम्पूर्ण नहीं हैं। इसमें कोई महारथी हैं, कोई घोड़ेसवार, कोई प्यादे भी हैं। लेकिन बाबा कहते हैं लास्ट सो फास्ट भी जा सकते हैं। अभी तक भी एक भी सीट फाइनल रिज़र्व नहीं है। पहला और दूसरा नम्बर मम्मा और बाबा की सीट तो फिक्स है, तीसरे नम्बर से सब खाली है। अभी रेस चल रही है। सीटी बजेगी तो सभी को सीट मिलेगी, तब सीट पर सब बैठेंगे। अभी सीटी नहीं बची है। अभी तो सब दौड़ रहे हैं यानि पुरुषार्थ कर रहे हैं। सिवाए दो सीट फाइनल के अभी बाबा ने अनाउन्स कुछ नहीं किया है। भले हम लोग समझते हैं दादियाँ हैं ना वह तो आठ में आ ही जायेंगी। हम कहाँ जायेंगे! लेकिन बाबा ने अनाउन्स नहीं किया है और जो भी चाहे वह चल सकता है, क्योंकि बाबा ने यह राज़ सुनाया था कि लास्ट सो फास्ट का एक्ज़ैम्पुल ज़रूर होना है। बाबा तो विदेशियों को भी कहता है। बाबा के अव्यक्त होने के बाद विदेश में सेवाकेन्द्र खुले हैं, लेकिन उन्हों को भी कहता है कोई भी एक्ज़ैम्पुल बन सकता है। बनना है तभी तो बाबा कहता है ना लास्ट सो फास्ट। नहीं होना है तो बाबा क्यों कहता है। लेकिन कौन होगा, वह अभी तो दिखाई देगा भी नहीं ना, अभी तो गुप्त होगा। तो कोई भी हो सकता है, लास्ट सो फास्ट में आपका ही नम्बर हो क्या पता? पता थोड़ेही पड़ता है, माया के तूफान कभी-कभी अच्छे अच्छे को भी ऐसे ले जाते हैं, यह भी समाचार बहुत सुनते हैं। इतना अच्छा जिसमें शक भी नहीं होगा, वह शादी करके पूछ लटका करके आ रहे हैं। क्या करें? तो यह भी होता है, माया है ना, माया पता नहीं क्या-क्या करा लेती है, तो किसी की भी सीट मुकर्रर नहीं है। आप सभी को चांस है, कोई भी नम्बर ले सकता है। अभी तक टू-लेट का बोर्ड नहीं लगा है, इसलिए सभी को मार्जिन है। कोई भी महारथी बन सकता है। महारथी माना जो परिस्थितियों का सामना करने में महान आत्मा है। महारथी माना यह नहीं कि जिसको हम महारथी कहते हैं वही महारथी फिक्स हो गये, नहीं। महारथी का अर्थ ही है जो समस्याओं में विजयी बन जाये। महान हो। अगर पीछे वाला आगे जावे तो कमाल गाई जायेगी ना।

तो यह तो बाबा का पक्का कर लिया होगा कि करना ही है। कोई भी स्थूल या सूक्ष्म काम हो, लेकिन करना ही है। अभी बाबा कहते बच्चे, पुरुषार्थ में यह दृढ़ता से संकल्प करो कि 'करना ही है'। 'ही' शब्द को अभी अण्डरलाइन करो। करना ही है ना कि करेंगे, देखेंगे, सोचेंगे, विचार तो है, उमंग तो बहुत है, यह बातें बाबा को सुना के बाबा को खुश नहीं करो। इसलिए करना ही है, चाहे कुछ भी हो जाये, क्या भी हो जाये। यह तीव्र पुरुषार्थी का संकल्प है। कई फिर कहते हैं हम पुरुषार्थ तो अच्छा करते हैं, अपने आप से संतुष्ट भी हैं, लेकिन हमारे को कोई जानता ही नहीं है, कोई पहचानता ही नहीं है। उस अनुसार हमको कोई सीट ही नहीं मिलती है। अरे, सीट तो आपकी पहले ही सतयुग में भी फिक्स हो गई है, बाबा के घर में भी फिक्स है यानि बाबा के दिल में तो आपकी सीट फिक्स है ना। लेकिन कइयों का फाउण्डेशन रेत पर है। मानो कोई ने ठीक बात नहीं की, पानी का ग्लास नहीं पूछा तो रूठ जायेंगे। यह भी फाउण्डेशन हुआ क्या? अरे बड़ा बनना माना ओखली में मुँह डालना। बड़ा बनना है तो किसी से नहीं डरना। ऐसे बड़ा बनना कोई मासी का घर नहीं है। पोज़ीशन वा सीट लेना कोई छोटी सी बात नहीं है। वास्तव में जितना बड़ा उतनी बड़ी बातें आयेंगी, लेकिन बड़ा होने के कारण उनमें शक्ति भरी होती है। हिम्मत के बिना बाबा की मदद नहीं होती है। एक कदम उठाने का कर्म हम करें फिर बाबा मदद करेगा। बाकी सिर्फ बाबा ही सब कुछ करें, यह नहीं हो सकता।